प्रथमः पाठः

प्रार्थना

त्वमेव माता च पिता त्वमेव
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव ।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव
त्वमेव सर्वं मम देव देव ॥

नमो नगेन्द्राय हिमालयाय
नमो विशालाय च सागराय।
नदीगणेभ्यः सुखसाधनेभ्यो
देशाय तस्मै मम भारताय॥

शब्दार्थाः

त्वमेव	=	तुम्हीं (त्वम् + एव)
च	=	और
बन्धुः	=	सम्बन्धी
सखा	=	मित्र
द्रविणम्	=	धन
सर्वम्	=	सब कुछ
मम	=	मेरा
नमो (नमः)	=	नमस्कार/प्रणाम
नगेन्द्राय	=	पर्वतराज को/के लिए
विशालः	=	बड़ा
नदीगणेभ्यः	=	नदी समूह को/के लिए
सुखसाधनेभ्यो	=	सुख के साधनों के लिए
देशाय	=	देश को/देश के लिए
तस्मै	=	उसको/के लिए
भारताय	=	भारत देश को/के लिए

व्याकरणम्

त्वमेव = त्वम् + एव । अहमेव, त्वमपि = तुम भी (त्वम् + अपि); अहमस्मि (अहम् + अस्मि) मैं हूँ। बन्धुः + च = बन्धुश्च। नमः – नमस्कार। इसके (नमः के) प्रयोग में चतुर्थी विभक्ति लगती है जैसे–भारताय नमः, सागराय नमः, देवाय नमः, देवेभ्यः नमः। तस्मै नमः = उसे नमस्कार। पर्वतराजाय हिमालयाय नमः, मुनये नमः।

अभ्यासः

मौखिकः

1. **इन शब्दों का अर्थ बताएँ–**

   द्रविणम्, सखा, विशालाय, नगेन्द्राय, मम।

2. **'बन्धुश्च' के समान इन शब्दों को जोड़कर बोलें–**

   हरिः + च, लोकः + च, पुनः + च, अजः + चरति।

3. **इन शब्दों का चतुर्थी एकवचन में रूप बताएँ–**

सागर, विशाल, देश, पुत्र, हिमालय।

4. **द्वितीय पद्य का पाठ करें।**

5. **'नमः' शब्द से युक्त पाँच वाक्य बोलें।**

लिखितः

6. **इन वाक्यों में रिक्त स्थानों को सही शब्द से भरें–**

(क) नमो ..... च सागराय।

(ख) ..... तस्मै ..... भारताय।

(ग) ..... सर्वं मम .....।

(घ) त्वमेव ..... द्रविणं त्वमेव।

(ङ) नदी ..... सुखसाधनेभ्यः।

7. निम्नलिखित वाक्यों को दो बार लिखें –

(क) तुम्हीं मेरे पिता हो (असि)। – त्वमेव मम पिता असि ।

(ख) मैं ही पुत्र हूँ (अस्मि)। – अहमेव पुत्रोऽस्मि ।

(ग) विशाल सागर को नमस्कार। – विशालाय सागराय नमस्कारः ।

(घ) भारत देश को नमस्कार। – भारताय देशाय नमस्कारः ।

(ङ) भारत मेरा सब कुछ है (अस्ति)। – भारतवर्षं मम सर्वम् अस्ति ।

8. **इन शब्दों से वाक्य बनाएँ–**

द्रविणम्, तस्मै, मम, नदीगणेभ्यः, सखा।

9. **भारत की विशेषताओं पर पाँच वाक्य हिन्दी में लिखें।**

10. **अपने स्मरण से कोई श्लोक लिखें जो इस पाठ से भिन्न हो।**

11. **इन का सुमेल करें–**

(i) नग + इन्द्रः	(क) भारतम्
(ii) हिम + आलयः	(ख) रामश्च
(iii) भरतः	(ग) नगेन्द्रः
(iv) सगरः	(घ) हिमालयः
(v) रामः + च	(ङ) सागरः